

चामुण्डा देवी की चालीसा (Chamunda Devi in Hindi)

दोहा

नीलवरण मा कालिका रहती सदा प्रचंड ।
दस हाथो मई ससत्रा धार देती दुस्त को दांड ॥

मधु केटभ संहार कर करी धर्म की जीत ।
मेरी भी बढ़ा हरो हो जो कर्म पुनीत ॥

चौपाई

नमस्कार चामुंडा माता । तीनो लोक मई मई विख्याता ॥
हिमाल्या मई पवितरा धाम है । महाशक्ति तुमको प्रडम है ॥1॥

मार्कडिअ ऋषि ने धीयया । कैसे प्रगती भेद बताया ॥
सूभ निसुभ दो डेतिए बलसाली । तीनो लोक जो कर दिए खाली ॥2॥

वायु अग्नि याँ कुबेर संग । सूर्या चंद्रा वरुण हुए तंग ॥
अपमानित चर्नो मई आए । गिरिराज हिमआलये को लाए ॥3॥

भद्रा-रॉद्रा निदृया धीयया । चेतन शक्ति करके बुलाया ॥
क्रोधित होकर काली आई । जिसने अपनी लीला दिखाई ॥4॥

चंदइ मूंदइ ओर सुंभ पतए । कामुक वेरी लइने आए ॥
पहले सुगुव दूत को मारा । भगा चंदइ भी मारा मारा ॥5॥

अरबो सैनिक लेकर आया । द्रहूँ लॉकंगन क्रोध दिखाया ॥
जैसे ही दुस्त ललकारा । हा उ सबद्द गुंजा के मारा ॥6॥

सेना ने मचाई भगदड़ । फादा सिंग ने आया जो बाद ॥
हट्टिया करने चंदड़-मूंदड़ आए । मदिरा पीकेर के घुरई ॥7॥

चतुरंगी सेना संग लाए । उचे उचे सीविएर गिराई ॥
तुमने क्रोधित रूप निकाला । प्रगती डाल गले मूंद माला ॥8॥

चर्म की सँडी चीते वाली । हड्डी ढाचा था बलसाली ॥
विकराल मुखी आँखे दिखलाई । जिसे देख सृष्टि घबराई ॥9॥

चंदड़ मूंदड़ ने चकरा चलाया । ले तलवार हू साबद गूजाया ॥
पपियो का कर दिया निस्तरा । चंदड़ मूंदड़ दोनो को मारा ॥10॥

हाथ मई मस्तक ले मुस्काई । पापी सेना फिर घबराई ॥
सरस्वती मा तुम्हे पुकारा । पड़ा चामुंडा नाम तिहरा ॥11॥

चंदड़ मूंदड़ की मिरतट्यु सुनकर । कालक मौर्या आए रात पर ॥
अरब खराब युध के पाठ पर । झोक दिए सब चामुंडा पर ॥12॥

उगर् चंडिका प्रगती आकर । गीडदीयो की वाडी भरकर ॥
काली खटवांग घुसो से मारा । ब्रह्मांड ने फेकि जल धारा ॥13॥

माहेश्वरी ने त्रिशूल चलाया । मा वेशदवी कक्करा घुमाया ॥
कार्तिके के शक्ति आई । नार्सिंघई दित्तियो पे छाई ॥14॥

चुन चुन सिंग सभी को खाया । हर दानव घायल घबराया ॥
रक्तबीज माया फेलाई । शक्ति उसने नई दिखाई ॥15॥

रक्त गिरा जब धरती उपर । नया डेतिए प्रगता था वही पर ॥
चाँदी मा अब शूल घुमाया । मारा उसको लहू चूसाया ॥16॥

सूभ निसुभ अब डोडे आए । सततर सेना भरकर लाए ॥
वाज़रपात संग सूल चलाया । सभी देवता कुछ घबराई ॥17॥

ललकारा फिर घुसा मारा । ले त्रिसूल किया निस्तरा ॥
सूभ निसुभ धरती पर सोए । डेटिए सभी देखकर रोए ॥18॥

कहमुंडा मा धूम बचाया । अपना सूभ मंदिर बनवाया ॥
सभी देवता आके मानते । हनुमत भेराव चवर दुलते ॥19॥

आसर्वी चेट नवराततरे अओ । धवजा नारियल भेट चाड़ौ ॥
वांडर नदी सनन करऔ । चामुंडा मा तुमको पियौ ॥20॥

दोहा

सरणागत को शक्ति दो हे जाग की आधार ।
'ओम' ये नेया दोलती कर दो भाव से पार ॥